Research Paper
IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 3 | MARCH 2025

भारत से विकसित भारत: ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार एवं कौशल विकास

डॉ. प्रियंका जैन [1]

[1] **सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय, विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान रामगिरि, बड़गांव, उदयपुर (राजस्थान).**

ABSTRACT:

महिलाओं को सशक्त एवं मजबूत बनाने तथा समाज में समानता प्रदान करने के उद्देश्य से महिला सशक्तिकरण क्या है तथा स्वरोजगार एवं कौशल विकास का उनके लिए क्या महत्व है, इस प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियां क्या है, महिलाओं को सशक्त बनाने की रणनीतियां क्या-क्या हो सकती है तथा इस क्षेत्र में दक्षिणी राजस्थान में क्या-क्या कार्य प्रमुख रूप से हुए हैं यह इस आलेख के प्रमुख उद्देश्य है।

जब महिला सशक्त बनेगी तो वह अपने परिवार समुदाय और राष्ट्र के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है अतः विभिन्न जीविकोपार्जन संबंधी कौशलों में प्रशिक्षित करके स्वरोजगार की और अग्रसर करना विकसित भारत की महती आवश्यकता है इसी संदर्भ में कौशल विकास एवं स्वरोजगार एक महत्वपूर्ण उपकरण एवं रणनीति के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

भारतीय ग्रामीण महिलाओं को अपने परिवेश के संदर्भ में कई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है इससे शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार तक उनकी पहुंच होना बड़ी चुनौतियां होती है।

कौशल विकास और उद्यमिता के अवसर प्रदान करके महिलाओं को आर्थिक, मानसिक एवं सामाजिक रूप से स्वतंत्र बनाकर समाज में अधिक सक्रिय भूमिका निभा सकने में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है।

इसी क्रम में भारत सरकार एवं निजी क्षेत्र के संयुक्त संस्थान कम्यूनिटी सेंटर एवं जनता कॉलेज द्वारा ग्रामीण महिलाओं एवं युवाओं के सशक्तिकरण के लिए समय स्थान परिस्थितियों के संदर्भ में कई नीतिगत सुधार एवं कार्यक्रमों को अथक प्रयास से प्रारंभ किया गया जिसमें शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों एवं प्रशिक्षणों तक महिलाओं की पहुंच एवं सुधार के साथ-साथ महिलाओं के लिए उद्यमशीलता के अवसरों को बढ़ावा देने एवं लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए खोले गए सिलाई प्रशिक्षण शिविर, महिला कसीदाकारी प्रशिक्षण, ग्रामीण दस्तकारी योजना, जनजाति कृषि विद्यालय, रेशम धागा कताई, रेशम वस्त्र बुनाई, रेशम वस्त्र छपाई, शहतूत की खेती, पत्तल-दोना निर्माण इत्यादि कार्यक्रम/ प्रशिक्षण प्रदान कर महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया गया।

इन महत्वपूर्ण कार्यक्रमों, गतिविधियों एवं योजनाओं का संचालन पंडित जनार्दन राय नागर द्वारा किया गया। पं. नागर दक्षिण राजस्थान के महान शिक्षाविद, सामाजिक कार्यकर्ता एवं महिलाओं के रूपांतरकारी व्यक्तित्व के रूप में उभरे हैं। उनके उद्यमशील नवाचारों को आज भी उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं द्वारा अनवरत रूप से संचालित कर महिलाओं के सशक्तिकरण में महती भूमिका का निर्वहन किया जा रहा है।

ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार और कौशल विकास न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को उन्नत करने का एक साधन है, बल्कि यह समाज में उनकी स्थिति को भी मजबूत करता है। जब महिलाएं सशक्त होती है तो पूरा समाज सशक्त होता है। इसलिए भारत को विकसित बनाने के इस यात्रा में महिलाओं की सहभागिता सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके लिए स्वरोजगार और कौशल विकास के अवसरों का विस्तार करना ही उचित दृष्टि में **"भारत से विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत"** की दिशा में एक सशक्त कदम होगा।

KEYWORDS:

महिला सशक्तिकरण, स्वरोजगार, कौशल विकास, ग्रामीण।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
17th March 2025	21st March 2025

भूमिका -

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही महिलाओं को सम्मान देने की पवित्र परंपरा रही है। कहा गया है **"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते , रमंते तत्र देवता "**। अर्थात् जहां नारियों का सम्मान किया जाता है, वहां देवता निवास करते है, किंतु मध्यकाल में विभिन्न कारणों से महिलाओं के अधिकार सीमित होते चले गए।

वर्तमान परिपेक्ष में भारत ही नहीं वरन पूरे विश्व में महिलाओं को सशक्त किए जाने की आवश्यकता पर चर्चा एवं प्रयास चल रहे हैं एवं महिला सशक्तिकरण वर्तमान का एक ज्वलंत विषय है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को पर्याप्त अधिकार प्रदान करना और उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र और सामाजिक रूप से पहचान योग्य बनाना। दूसरे शब्दों में, "महिला सशक्तिकरण" शब्द का तात्पर्य महिलाओं को पुरुषों के बराबर कमाने , काम करने और निर्णय लेने का समान अवसर प्रदान करके समाज में मौजूद अंतर को कम करना है।

भारत के विकास में ग्रामीण महिलाओं की भी अहम भूमिका है। भारत कृषि प्रधान एवं गांवों में बसने वाला देश है। किसी भी राष्ट्र के विकास में आधार से ऊपरी स्तर की प्रत्येक कड़ी को सशक्त करके ही समृद्ध एवं विकसित राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। इसी क्रम में गांव के युवा एवं विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त करना एक बहुत बड़ा उद्देश्य है।

जब महिला सशक्त बनेगी तो वह अपने परिवार समुदाय और राष्ट्र के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। अतः विभिन्न जीविको पार्जन संबंधी कौशलों में प्रशिक्षित करके स्वरोजगार की और अग्रसर करना विकसित भारत की महती आवश्यकता है। इसी

संदर्भ में कौशल विकास एवं स्वरोजगार एक महत्वपूर्ण उपकरण एवं रणनीति के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

ग्रामीण महिलाओं की स्थिति एवं चुनौतियां:-

ग्रामीण भारतीय समाज के अधिकांश परिवारों में महिलाओं को अभी भी एक वस्तु समझा जाता है। उनसे केवल घर का काम करने , भोजन बनाना, बर्तन और कपड़े साफ करने आदि की अपेक्षा की जाती है। वे जो कुछ भी करती हैं उसे परिवार के पुरुषों द्वारा अनुमोदित किया जाना आवश्यक माना जाता है।

शिक्षा की कमी - किसी महिला या लड़की को शिक्षित करना समय और धन की बर्बादी माना जाता है।

स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच - ग्रामीण महिलाएं अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नहीं होती है और उनकी इन सेवाओं तक पर्याप्त पहुंच भी नहीं होती है

आर्थिक पिछड़ापन - अधिकांश ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक निर्णय लेने की स्वतंत्रता नहीं होती है तथा वह आर्थिक रूप से कमजोर भी होती है। इस कारण शारीरिक व मानसिक शोषण की शिकार होती रहती है।

धन की कमी - स्वरोजगार स्थापित करने के लिए धन की कमी ग्रामीण महिलाओं के लिए एक बड़ी चुनौती है।

बाजार तक पहुंच - ग्रामीण क्षेत्रों में बाजार तक सीमित पहुंच ग्रामीण महिलाओं के उत्पादों और सेवाओं की बिक्री में बाधा उत्पन्न करती है।

कौशल की कमी: कई ग्रामीण महिलाओं के पास आवश्यक हस्तकौशल की कमी होती है।

अवसरों की कमी - उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार मेलजो ल बढ़ाने, नौकरी या व्यवसाय करने की भी अनुमति नहीं है।

लैंगिक भेदभाव - ग्रामीण महिलाओं को अत्यधिक लैंगिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जिससे उन्हें समान अधिकार नहीं मिल पाते हैं।

इस तरह की स्थिति बिल्कुल अस्वीकार्य है और यह किसी राष्ट्र के विकास में एक बड़ी बाधा उत्पन्न करती है। पंडित नागर का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण देकर एवं कौशल विकास करके ग्रामीण समाज को नेतृत्व एवं मार्गदर्शन योग्य बनाना था।

स्वरोजगार एवं कौशल विकास की आवश्यकता एवं महत्व -

महिलाओं को कौशल विकास एवं रोजगार द्वारा सशक्त बनाना वर्तमान में महत्वपूर्ण विषय है। यह महिलाओं को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक होने के लिए प्रेरित करता है। कौशल विकास महिलाओं में आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता लाने हेतु महत्वपूर्ण मध्यम है। इससे उनकी दशा और दिशा में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

यह एक कटु सत्य है कि विश्व के प्रत्येक देश चाहे वह विकासशील हो या विकसित का एक इतिहास है, जो महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार के बारे में बहुत कुछ कहता है। महिलाओं को अपने परिवार और समाज में भी कई तरह की शारीरिक और मानसिक यातनाओं का सामना करना पड़ता रहा है।

हालाँकि, स्थिति में पहले से काफी सुधार हुआ है , विशेषकर विकसित देशों में। लेकिन , तीसरी दुनिया के देश जैसे भारत , अफ्रीका आदि सुधारों के उपरांत भी अपने क्षेत्र की महिलाओं को सशक्त बनाने के मामले में अभी भी पीछे हैं।

स्वरोजगार और कौशल विकास के उद्देश्य –

आर्थिक सशक्तिकरण - स्वरोजगार द्वारा ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है, जिससे वे अपनी और अपने परिवार की जरूरतों को पूरा कर सके।

आत्मनिर्भरता - कौशल विकास ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाता है , जिससे वे अपनी क्षमताओं का उपयोग करके जीवनयापन कर सके।

सामाजिक सम्मान - स्वरोजगार और कौशल विकास ग्रामीण महिलाओं को सामाजिक सम्मान दिलाना।

समान अवसर - स्वरोजगार एवं कौशल विकास के द्वारा ग्रामीण महिलाओं को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समान अवसर प्रदान कराना।

ग्रामीण विकास - ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण से ग्रामीण विकास को गति देना एवं राष्ट्र विकास की सशक्त कड़ी बनाना।

आर्थिक सशक्तिकरण: स्वरोजगार एवं कौशल विकास द्वारा –

ऐसे कई तरीके हैं जिनके माध्यम से महिला आर्थिक सशक्तिकरण किया जा सकता है। यह सुनिश्चित करने के लिए एक तंत्र स्थापित किया जाए कि महिलाओं को पुरुषों के समान विभिन्न क्षेत्रों में समान अवसर प्रदान किए जा सके।

वर्तमान में महिलाओं और लड़कियों को शिक्षित करने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं ताकि वे लाभकारी रूप से रोजगार प्राप्त कर सकें। यह देखना भी समाज की जिम्मेदारी है कि महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में उचित अवसर मिलें।

कौशल विकास कार्यक्रम , विशेष रूप से महिलाओं के लिए डिज़ाइन किए गए , उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने के लिए आवश्यक हैं। महिलाओं के मामले में शिक्षा और कौशल विकास को सर्वाधिक महत्व दिया दिया जारहा है।

न केवल सरकारों को बल्कि समाज को भी प्राथमिकता के आधार पर ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में सक्रिय होना होगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं के हितों की जीवन भर रक्षा करने हेतु संकल्पबद्ध होना होगा। समय की मांग है कि ग्रामीण महिलाएं निम्नलिखित कौशलों को प्राप्त करें जैसे – विविध शैक्षिक प्रवृत्तियों का प्रशिक्षण , जीवन कौशल प्रशिक्षण , स्वच्छता प्रशिक्षण , बन्धेज कला प्रशिक्षण , मोमबत्ती निर्माण , सिलाई प्रशिक्षण, सिलाई मशीन की मरम्मत एवं रख -रखाव प्रशिक्षण , प्रजनन स्वास्थ्य , मछली पालन, मधुमक्खी पालन, रेशम उत्पादन, रेशम कपड़ा प्रिंटिंग, बुनाई कला, तकनीकी कार्यों का प्रशिक्षण, कंप्यूटर प्रशिक्षण इत्यादि-इत्यादि अनेको ऐसे कार्य है जिनके कौशल विकास के माध्यम से ग्रामीण महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

दक्षिण राजस्थान में महिलाओं को सशक्त करने के इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु पंडित जनार्दन राय नागर द्वारा कई संस्थानों की स्थापना की गई तथा रोजगारोन्मुखी कई प्रशिक्षण एवं कार्यक्रम संचालित किए गए।

सरकारी प्रयास-

स्वरोजगार एवं कौशल विकास के लिए सरकारें भी सजग हुई है एवं पिछले वर्षों में महिलाओं हेतु कई प्रयास भी किए गए हैं जैसे -प्रधानमंत्री ग्रामीण कौशल विकास योजना (पीएमजीएसडीवाई) - यह योजना ग्रामीण युवाओं विशेष रूप से महिलाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करती है। मुद्रा योजना- यह योजना ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए ऋण प्रदान करती है। स्टैंड-अप इंडिया योजना- यह योजना अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमियों को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

इनके अतिरिक्त अन्य कई कार्यक्रम तथा विभिन्न एजेन्सियाँ जैसे - राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन, सीखो और कमाओ , दीन दयाल उपाध्याय ग्राम कौशल योजना , राष्ट्रीय कौशल विकास निगम, राष्ट्रीय कौशल विकास एजेंसी , राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन , उड़ान कार्यक्रम (कौशल विकास मंत्रालय), युवा-कौशल विकास कार्यक्रम, इत्यादिं। अतः सरकार बड़े स्तर पर कौशल विकास को प्रो त्साहन दे रही है। सरकार का यह प्रयास है कि महिलाएं अधिक से अधिक इन योजनाओं तथा स्कीम का लाभ उठा सकें। सरकार के कार्यक्रम जैसे 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्ट-अप इंडिया' का उद्देश्य रोजगार सृजन करके कौशल विकास करना रहा है , ताकि महिला सशक्त हो और देश के आर्थिक वि कास में अपना योगदान दे सकें। सरकारी प्रयासों तथा कार्यक्रम जैसे 'मेक इन इंडिया ' आदि में महिला उद्यमियों की भागीदारी बहुत संतोषजनक रही है।

कई गैर सरकारी संगठन भी ग्रामीण महिलाओं को विभिन्न कौशलों में प्रशिक्षण प्रदान करते हैं तथा स्वरोजगार और कौशल विकास के बारे में जागरूक करने के साथ ही वित्तीय सहायता भी प्रदान करते हैं।

दक्षिण राजस्थान (मेवाड़) में पं. जनार्दनराय नागर के विशेष प्रयास -

मेवाड़: आजादी से पूर्व की स्थिति -

"आधारे मेदपाटे क्षितितलपृष्ठे , चित्रकूटे च कूटे " आर्षवाणी से पूजित , विदित यह मेदपाट यानि मेवाड़ प्रदेश न केवल वीर भूमि है, अपितु संतस्थली व शिक्षा स्थली भी है। यह भारत के पश्चिम में और राजस्थान के दक्षिण में स्थित पर्वतिय प्रदेश है।

आजादी से पूर्व मेवाड़ में महाराणाओं का शासन था। यद्यपि मेवाड़ का राजवंश अपेक्षाकृत प्रजावत्सल और नीतिवान था। ज नता के हितों के प्रति जागरूक रहता था , तथापि सामन्त तंत्र के चलते महिलाओं एवं समाज के पिछड़े और दीन-हीन श्रमजीवियों का सामर्थ्य अधिक नहीं था। स्वतन्त्रता आन्दोलन के उसी दौर में राष्ट्र के कई शिक्षाविदों एवं समाज सुधारकों ने राष्ट्रजनों में चेतना की लहर जगाने हेतु अनेक समाज सुधार कार्यक्रम प्रारंभ किए एवं शिक्षण तथा कौशल प्रशिक्षण संस्थानों की भी स्थापना की। ऐसे संक्रमण काल में मेवाड़ भी किसी भी दृष्टि से अछूता न रहे, इसलिए अनेक समाज सुधारक मेवाड़ में चेतना जगाने एवं महिला सशक्तिकरण हेतु प्रयासरत रहे, उनमें से मनीषी पण्डित जनार्दनराय नागर उल्लेखनीय अग्रणी व्यक्तित्व रहे हैं।

परिचय: पं. जनार्दनराय नागर -

मेवाड़ कई विभूतियों की जननी रहा है। इनमें से एक हैं पं. जनार्दनराय नागर जिन्होंने सर्वप्रथम मेवाड़ में महिला सशक्तिकरण एवं शिक्षा की अलख तो जगाई ही साथ ही उनके जनकल्याणकारी कार्यों ने इस क्षेत्र को विशिष्ट स्थान दिलाया।

पंडित जनार्दनराय नागर का जन्म 11 जून 1911 में उदयपुर राजस्थान में हुआ था। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से 1935-36 में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत वे मेवाड़ लौट कर आए। तत्पश्चात पं. नागर शिक्षा, राजनीति, पत्रकारिता, साहित्य सृजन तथा समाज सेवा के क्षेत्र में कूद पड़े।

पं. जनार्दनराय नागर ने 21 अगस्त 1937 ई. को हिंदी विद्यापीठ (राजस्थान विद्यापीठ) की स्थापना की। समाज के कमजोर तबके विशेषकर श्रमिकों , पिछड़े वर्ग और महिलाओं के शिक्षण के साथ आर्थि क, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक विकास का कार्य इस संस्था के माध्यम से निरन्तर किया गया। महिलाओं को स्वरोजगार एवं विभिन्न प्रकार के कौशलों का विकास करके उन्हें आर्थिक रूप से सबल बनाने का प्रयास किया गया।

यह पं. नागर का सहज संवेदन ही था जिसने स्वयं के द्वा रा स्थापित संस्था विद्यापीठ को ग्रामोन्मुख बनाया, समाज के वंचित, उपेक्षित महिलाओं और श्रमजीवी वर्ग तक पहुँचाया। जिससे महिलाओं के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया।

प्रमुख कार्य एवं प्रयास -

"पं. नागर ने आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र झाड़ोल फलासिया , मोहम्मद फलासिया, बदराणा, गोगला, बाड़द व सुल्तानजी का खेड़ा आदि गाँवों में विद्यापीठ के माध्यम से विद्यालय प्रारम्भ किए। उदयपुर, अजमेर, हटूण्डी, कोटा, मोलसर तथा डबोक में विद्यालय स्थापित कर इन क्षेत्रों के वंचित महिलाओं और बालकों को शिक्षा एवं कौशल विकास के अव सर उपलब्ध कराए।"

1953 में डेनमार्क के लोक विद्यालयों की तर्ज पर डबोक, उदयपुर में प्रदेश के पहले जनता कॉलेज की स्थापना की गई।

मंगलमूर्ति इन्दिरा गाँधी जनता कॉलेज डबोक-

इस संस्थान की स्थापना भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की सामुदायिक शिक्षा विकास योजना- 1 के अन्तर्गत डेनिस फॉक स्कूल योजना के आधार पर देश में जनता कॉलेजों की स्थापना हुई। प्रौढ़ एवं ग्रामीण क्षेत्र के विकास संबंधी कार्यक्रमों में अनुभवी होने के कारण राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर को यह कार्य सौंपा गया। जो मेवाड़ क्षेत्र में एक नवीन सोच के साथ किया जाने वाला कार्य था। 16 जुलाई 1953 में इस कॉलेज की स्थापना हुई। तब से लेकर अब तक यह विभाग समाज के विकास संबंधी कार्यक्रमों में अपनी क्रियाशील भूमिका निभा रहा है।''

यह शिक्षा का नवीन कल्प मंगलमूर्ति इंदिरा गाँधी जनता कॉलेज के नाम से विकसित हुआ। इस संस्थान में ग्रामीण शिक्षण एवं व्यावसायिक शिक्षा के विकास के लिए शिक्षण प्रशिक्षण एवं सामुदायिक केन्द्रों की एक व्यापक कार्य योजना को मूर्त रूप प्रदान किया गया। जनता कॉलेज उसके लिए एक विकल्प के रूप में विकसित किया गया। जिससे प्रशिक्षण कार्यक्रम उसके परिवार, व्यक्तिगत एवं समाज की आवश्यकताओं एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखा गया। उनके लिए गाँव में ही स्वरोजगार विकसित करने का प्रकल्प लिया गया, ताकि वह बाज़ार एवं मंहगाई के साथ शोषण से बच सकें।

इसके प्रमुख उद्देश्य निम्न थे-

- ग्रामीण महिलाओं एवं युवकों को सुनागरिकता व स्थानीय कृषि एवं घरेलू धन्धों का प्रशिक्षण देकर ग्रामीण समाज को नेतृत्व एवं मार्गदर्शन योग्य बनाना।
- आर्थिक स्वावलम्बन व सामाजिक , सांस्कृतिक विकास के सैद्धान्तिक व व्यावहारिक पहलुओं का ज्ञान एवं प्रशिक्षण देना।
- निराश्रित बालकों एवं बालिकाओं को शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर स्वावलम्बी एवं सुनागरिक बनाना।

उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वर्तमान में इस विभाग द्वारा ''स्वच्छता प्रशिक्षण, जीवन कौशल प्रशिक्षण, बन्धेज कला प्रशिक्षण, मोमबत्ती निर्माण, सिलाई प्रशिक्षण, सिलाई मशीन की मरम्मत एवं रख-रखाव प्रशिक्षण, विविध शैक्षिक प्रवृत्तियों, प्रजनन स्वास्थ्य शिविर एवं वर्तमान समय की मांग के अनुसार कई तकनीकी एवं कंप्यूटर आधारित प्रशिक्षण , विधिक जागरूकता कार्यक्रम इत्यादि प्रवृत्तियों का संचालन किया जा रहा है।

''स्थापना के प्रारम्भिक वर्षों में कॉलेज द्वा रा ग्रामीण नेतृत्व क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से ग्रामीण युवाओं के लिए छः -छः माह के प्रशिक्षण क्रमशः कॉलेज व ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित किए गए। इसके साथ ही कृषक प्रशिक्षण , ग्रामीण महिला जन -सहभागिता प्रशिक्षण आयोजित किए जाते थे। इनके अतिरिक्त निराश्रि त बाल कल्याण केन्द्र, एकीकृत ग्रामीण विकास योजना के अन्तर्गत महिला जागृति केन्द्र , फुलवाड़ी, ग्रामीण चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा केन्द्र, रेशम उत्पादन योजना आदि का भी संचालन किया गया।'

इस प्रकार यह कॉलेज वर्तमान में ऐसी महिलाओं और पुरूषों को प्रशिक्षण देने का कार्य करता है, जो ग्रामीण क्षेत्र में जाकर अपने ज्ञान व कौशल का उपयोग करके अन्य व्यक्तियों को लाभान्वित करते है।

सामुदायिक केन्द्र विभाग (कम्युनिटी सेन्टर्स विभाग) -

कम्युनिटी सेन्टर्स विभाग की स्थापना जुलाई 1953 में प्रथम पंचवर्षीय योजनान्तर्गत भा रत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की विशेष योजना संख्या-1 के अन्तर्गत की गई।''

''इस संस्था के पीछे पं. नागर का उद्देश्य उदयपुर संभाग के दूर-दराज के आदिवासी क्षेत्र की जनता में शिक्षा और कौशल का प्रचार -प्रसार करना एवं जनता को जागरुक करना तथा चेतना उत्पन्न करना रहा है।''

ग्रामीण महिलाओं को सशक्त करने से संबंधित इस विभाग के प्रमुख उद्देश्य निम्न थें-

- ग्रामीणों में विशेषकर महिलाओं में जन चेतना जागृत करना , समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों के प्रति सजग करना।
- महिलाओं और बालिकाओं को शिक्षित करना , स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण प्रदान करना, सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान करना।
- महिलाओं को स्वयं सहायता समूह के माध्यम से अल्पबचत के लिए प्रेरित करना एवं स्वरोजगार से जोड़ना।
- शिक्षित बेरोजगार महिलाओं को विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से रोजगार से जोड़ना।

स्वरोजगार योग्य बनाकर महिलाओं को सशक्त करने की दृष्टि से ग्रामीण दस्तकारी योजना भी संचालित की जा रही है। अधिकांश भारतीय समुदाय का निवास गाँवों में है तथा शहरों की भांति ही गाँवों मे भी सुन्दर व सजावटी खिलौनों की माँग निरन्तर बनी रहती है। यह भी एक तथ्य है कि ग्रामीण अंचलों में ऐसी लकड़ी को कम मूल्य पर सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। अतः कच्चे माल की बहुतायत को दृष्टिगत रखते हुए चावण्ड में खिलौने निर्मित करने की कला में ग्रामीण महिलाओं तथा युवकों को दक्ष करने के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रा रम्भ किया गया है साथ ही हैण्डलूम तथा पावरलूम द्वारा कपड़े , दरियाँ व निवार आदि का निर्माण करने हेतु 6 माह का प्रशिक्षण दिया जाता है।

मोटा तथा टिकाऊ कपड़ा गाँवों की मूलभूत आवश्यकता है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए विभाग द्वारा झाड़ोल में वस्त्र व्यवसाय का प्रशि क्षण प्रदान किया जा रहा है। सपनों को आकार देने और हौंसले बुलन्द करने , आजीविका अर्जन में सहायता करने में केन्द्रों की महत्ती भूमिका वर्तमान में दृष्टिगोचर होती है।

पंडित सावरमल सेडमल जनजाति कृषि विद्यालय-

जनजाति बाहुल्य क्षेत्र झाड़ोल में समाज के पिछड़े , शोषित श्रमजीवी, आदिवासी अनाश्रित

एवं निर्धन वर्ग की महिलाओं तथा विद्यार्थियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ -साथ शिक्षा-दीक्षा प्रदान करने के लिए कृषि एवं उससे संबंधित व्यवसायों , परम्परागत ग्रामोद्योगों एवं नवीन व्यवसायों में सघन प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम संचा लित किए जा रहे हैं , जिनमें कृषि उपकरण निर्माण, सुथारी कार्य, पशुसंवर्द्धन, मुर्गी पालन, पौध संरक्षण, केन, फर्नीचर, भवन निर्माण, शहतूत की खेती, रेशम कीट पालन, रेशम उत्पादन, रेशम धागा निर्माण, वस्त्र बुनाई, रंगाई, छपाई एवं पत्तल-दोना निर्माण आदि प्रशिक्षण पंडित सावरमल सेडमल जनजाति कृषि विद्यालय द्वारा श्रमजीवियों को आत्मनिर्भर बनाने लिए दिए जा रहे हैं , जो कि पं. नागर की सोच का ही सुपरिणाम है।

महिला अध्ययन केन्द्र -

इसकी स्थापना भी ग्रामीण , निर्धन एवं वंचित , मजदूर श्रमिक वर्ग की महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए की गई है। इस अध्ययन केन्द्र में **मशरूम की खेती** का प्रशिक्षण देकर आर्थिक संबलता प्रदान की जाती है साथ ही मशरूम का प्रयोग खाने के लिए भी कर महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक बनाया जाता है।

मनीषी पं. नागर गाँधीजी से विशेष रूप से प्रभावित थे। वे गाँ धीवादी विचार धारा के थे। गाँधीजी के ध्येयानुसार **'शिक्षा को बेरोजगारी के विरुद्ध एक बीमा होना चाहिए। '** गाँधीजी की **बेसिक शिक्षा योजना , वर्धा शिक्षा योजना** किसी न किसी व्यावसायिक प्रशिक्षण का शिक्षा के साथ -साथ देने पर आधारित थी। वर्तमान में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** में भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए गए हैं। ''पं. नागर का भी मानना था कि महिलाओं तथा युवाओं को रोजगार प्राप्त करने , स्वरोजगार स्थापित करने तथा उचित कौशल निर्माण हेतु उत्पादक मूलक व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल प्रदान करना आवश्यक है। स्कूल में लोकोपयोगी एवं जीवन व्यवहार में आने वाले घरेलू उद्योगों का अनिवार्यतः प्रशिक्षण दिया जाए, जिससे बालक सीखते हुए अर्जन कर सकें।''

युग प्रवर्तक पं. जनार्दनराय नागर की प्रतिभा विलक्षण थी। जो प्रयोग आज की सरकारें और आयोग वर्तमान में कर रहे हैं , वह सभी प्रयोग पं. नागर आज से लगभग 70 वर्ष पूर्व ही कर चुके थे। यह इस बात का प्रमाण है कि श्रद्धेय पं . नागर ने समाज की आवश्यकताओं को भली प्रकार समझा और उनकी पूर्ति का कारगर उपाय कर राष्ट्र को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

निष्कर्ष –

ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक रूप से सशक्ति करण भारत के विकास के लिए आवश्यक है। स्वरोजगार और कौशल विकास ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के दो महत्वपूर्ण साधन हैं। सरकार, गैर-सरकारी संगठनों, परिवारों और समाज को मिलकर काम करना होगा ताकि ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार और कौश ल विकास के अवसर प्रदान किए जा सकें। यह न केवल ग्रामीण महिलाओं के जीवन स्तर को ऊपर उठाएगा बल्कि समग्र राष्ट्रीय विकास में भी योगदान देगा।

पंडित जनार्दन राय नागर दक्षिण राजस्थान के महान शिक्षाविद , सामाजिक कार्यकर्ता एवं ग्रामीण युवा व महिलाओं के रूपांतरकारी व्यक्तित्व के रूप में उभरे हैं। आपके महती प्रयासों एवं उद्यमिता नवाचारों के द्वारा ग्रामीण महिला एवं युवाओं की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिला जो विकसित भारत की ओर बढ़ते कदम में अनवरत महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है। पं. नागर के कार्य एवं उद्यमिता नवाचारों को आज भी उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं द्वारा अनवरत रूप से संचालित कर ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया जा रहा है।

जब-जब ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार द्वारा अर्थार्जन करने का अवसर मिला है , तब-तब उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। साथ ही महिला के आत्मविश्वास में भी बढ़ोतरी हुई है, निर्णय क्षमता में वृद्धि हुई है , परिवार में जागरूकता बढ़ी है, समाज में मान सम्मान बढ़ा है और राष्ट्र निर्माण में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी का विकास हुआ है। जिससे सशक्त एवं विकसित भारत के निर्माण में कदम आगे बढ़ाए जा सके हैं।

REFERENCES

1. चन्द्रा, डॉ. तूलिका, कौशल विकास और महिला सशक्तिकरण, एम.के.पी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून

2. नागर, पं. जनार्दनराय, भारतीय राष्टीय शिक्षा आयोजना, 1983

3. राजस्थान साहित्कार प्रस्तुति- मनीषी पं. जनार्दनराय नागर, राज. साहित्य अकादमी, 1997

4. मधुमती, राज. साहित्य अकादमी, उदयपुर, मार्च 1998

5. राजस्थान विद्यापीठ कुल - एक परिचय, उदयपुर, 1998

6. मनीषी पं. जनार्दनराय नागरः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, स्मृति ग्रंथ, 2006

7. शोध पत्रिका, वर्ष 60, अंक 1-4, साहित्य संस्थान, राज. विद्यापीठ, उदयपुर, जन.-दिस. 2009

8. मनीषी पं. जनार्दनराय नागर: शताब्दी स्मरण (1911-2011), 2012

9. गर्ग, भवानी शंकर, जनशिक्षण के बढ़ते चरण (1937-1985), राज. विद्यापीठ, उदयपुर

10. https://nsfdc.nic.in

11. https://hindi.indiaawaterportal.org